बिल्ली चूहे की प्रेम कहानी



नैनेट न्यूमेन, हिन्दी: मोहिनी कुमार





लियोला



जैस्पर

बिल्ली चूहे की प्रेम कहानी

नैनेट न्यूमेन
हिन्दी: मोहिनी कुमार

ब्रायन, साराह और एम्मा
एन एन
लुई, मार्क और बेन
एम एफ



बिल्ली चूहे की प्रेम कहानी

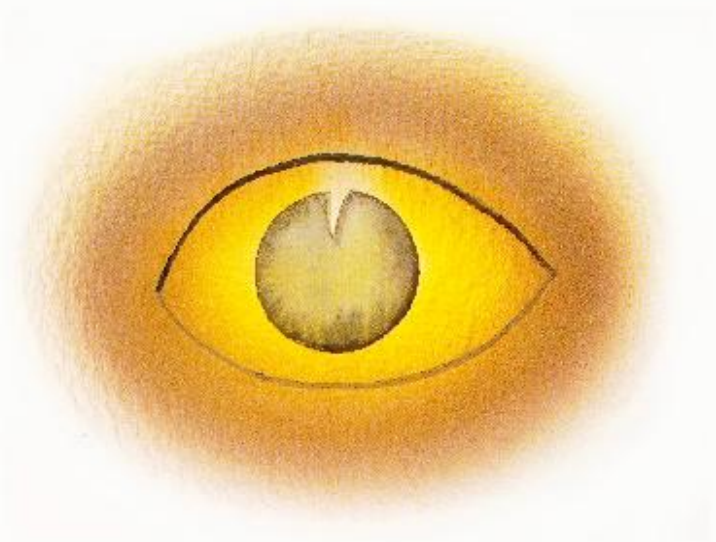


यह कहानी एक आख्यान है,
इसमें प्यार, निराशा और आनंद, जय का बखान है।
'अच्छा है' कहकर बस मुंह दबाकर हँसना नहीं,
जब मैं कहूँ, "यह चूहे-बिल्ली की कथा है सही।"

लियोला बिल्ली मात्र एक बिल्ली नहीं थी।
वह तेज-तर्रार, उग्र, सख्त, तेजस्वी थी।
जैस्पर था एक चूहा, (भविष्य का नेता)
कविहृदय, आकर्षक और थोड़ा बुद्धू-सा।

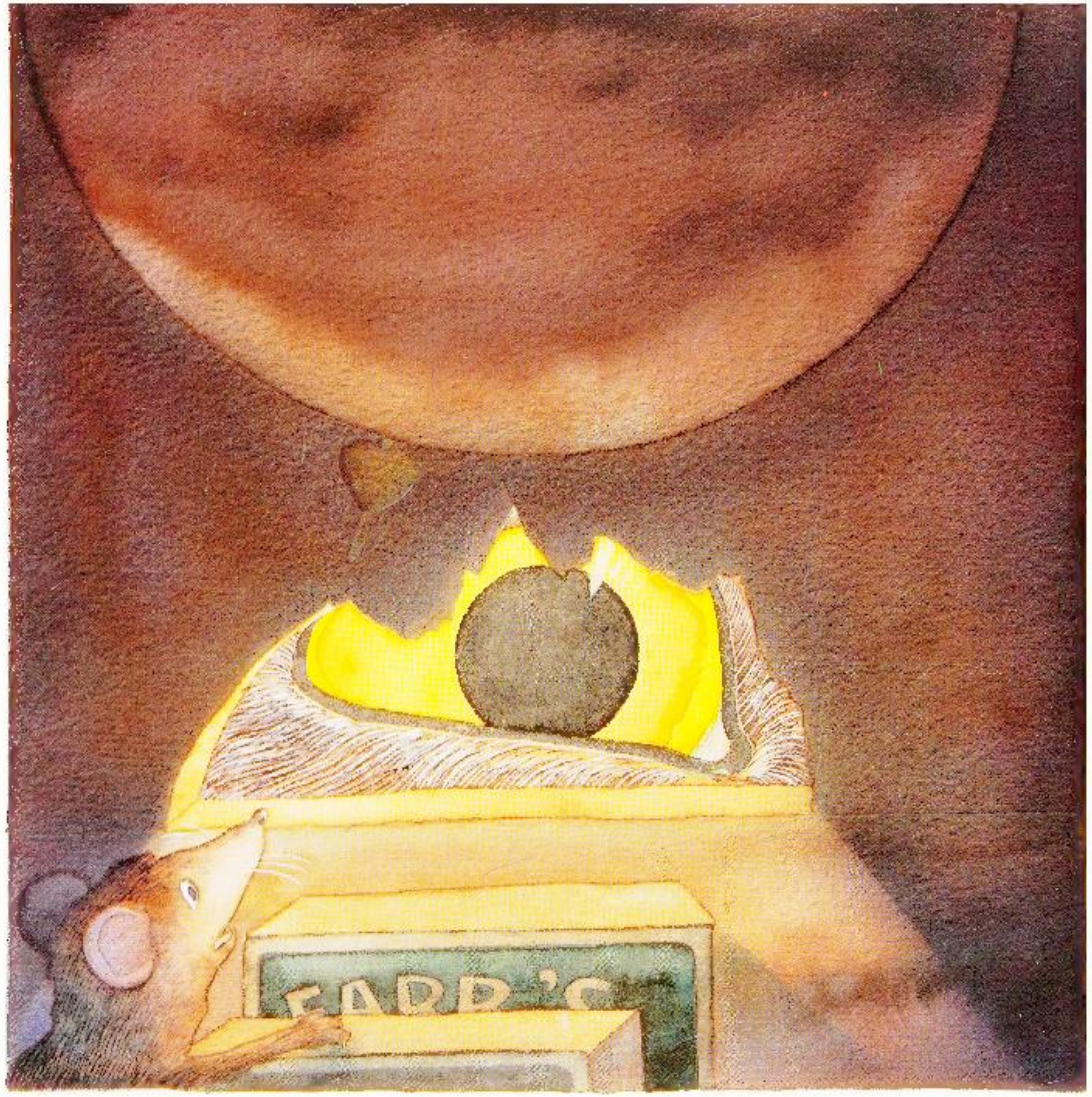
मैं उनकी पहली भेंट से शुरू करता हूँ, (न जाने क्यों)
बस, यह दिल छूने वाली है, आप शायद पड़ेंगे रो।

भेंट

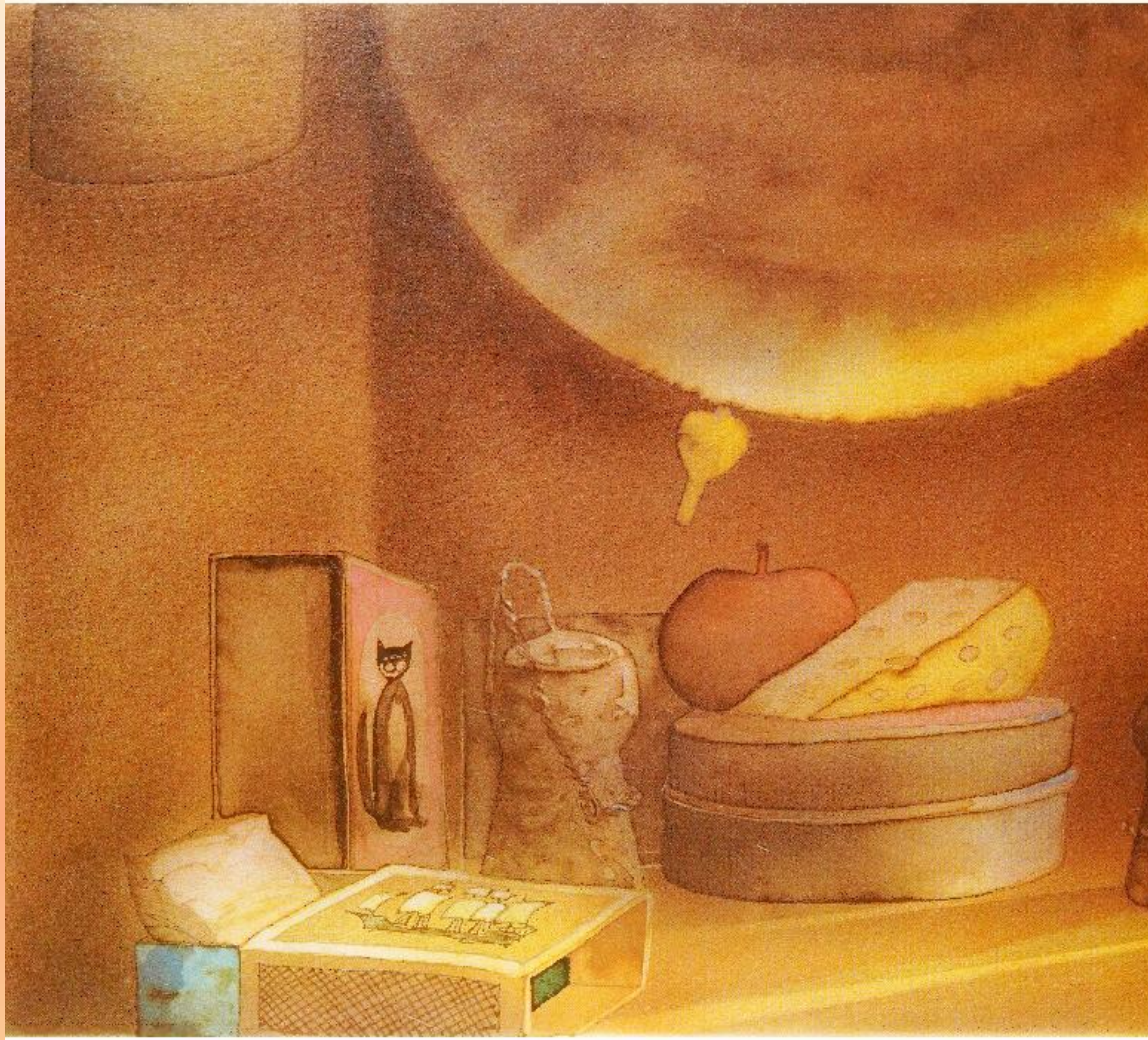


वह शांति से एक घड़ी के छेद में था रहता,
जैस्पर को एक सुबह लगा बड़ा झटका।

अंधेरे में उस ने जो बाहर झाँका तो पाया,
एक पीली बिल्ली ने अपनी आँखों को तुरत घुमाया।
उस ने बेचारे जैस्पर को घूरा, मानों बताया,
घुटनों पर आ जा बच्चू, तेरा अंतिम क्षण है आया।



अनेक विचार आने लगे कैस्पर के नन्हें दिमाग में,
सबसे महत्वपूर्ण था, बस अब मौत ही थी उसके भाग में।
वह कराहा, गरजा और कुत्ते जैसा भौंका,
कठोर शब्दों में चिल्लाया, "भाग जा यहाँ से, हवा का नृशंस झोंका।"
आँख न झपकी, न हिली, न गई।
बस घूरती रही उसकी हरकतों को, जैसे घटना हो नई।



अंततः गुर्राने और थूकने से थककर
बेचारे चूहे ने सोचा, "सबक दूँ इसे पीट कर।"
उसने दम लगाकर आँख में मारा एक मुक्का।
पर आँख ने बस झपकाई पलक, उसे लगा एक धक्का।
आँख में मारते हुए उसके दिमाग ने सोचा,
'ये आँख इतनी प्यारी है, मेरे पास रह जाए तो कितना अच्छा।'



वह रुका, उसने ताका, दिल उसका धड़का,
क्षण भर में उसने जाना, दिल में प्यार का लगा है तड़का।
तुरंत उसने एक कागज पर लिख डाला,
'मेरी प्यारी, मैं तुम्हें प्यार करता हूँ। कृपया, मत बुनो लड़ाई का जाला।'

प्यार की किरण फूटी



पल-भर के लिए आँख धुंधलाई शक से
तब एक आँसू छलक आया उस पलक से।
(आठ की माँ) लियोला ने सोचा अपने मन में,
'प्रेम एक भाव-मात्र है, जो छूट चुका बहुत पहले।



वह स्वभाव से थी रूखी, शरीर से जर्जर,
जीवन की लड़ाई में बीते उसके दिन।
पर किसी ने नहीं कहा, "मेरी पत्नी बनो।
मैं नहीं रह सकता तुम बिन।"



तो उस अजनबी चूहे को मारने की जगह
सुध-बुध खोकर, लुढ़कती-पुड़कती घूम गई घर-भर में वह।
पर जैस्पर ने उसे खोज लिया तुरत, बोला, "यह कोई चाल नहीं है।
तुम्हें प्यार करता हूँ। मुझसे शादी कर लो। मेरी विनती यही है।"



उसकी नज़रों में लियोला थी सुंदर, दिव्य और चिकनी।
वह झुक गया घुटने पर, बोला, "तुम्हें बनाना चाहता हूँ अपनी।"



दोनों की हुई शादी, सबको हुआ अचरज।
पंडित बना इक पूज्य कुत्ता, रेवरेंड बेनी, रहता था कुछ दूर गज।



"इस बूढ़ी बिल्ली को तुम ले जाओगे?" जैस्पर बोला, "जरूर।"
बिल्ली के छोटे आठ बच्चों ने भरी आह!
आखिर मिला पिता उन्हें, मिला सुरूर।

विपदा का हमला



चाहता हूँ कह सकता, 'सुख से बीता उनका जीवन।'
पर जल्द ही उन पर छाया विपदा का काला घन।
हनीमून के दिन उनके अभी खतम भी न हुए,
विपत्ति के बादल उनके जीवन में पूरे छा गए।



जैस्पर को क्या पता था, उसने सोचा भी न था,
कि गुरुवार की दोपहर में उसे 'युद्ध के लिए ' बुलाया जाएगा।
भोले-भाले जोड़े के पास एक पत्र आया, कहा -
"जैस्पर युद्ध शुरू हुआ है। तुम तुरंत आओ यहाँ।"
उसने कागज़ को देखा, हकलाते हुए बोला, "वाह रे चूहे!"
क्योंकि चूहों का संग्राम था बिल्लियों से।



लियोला बस रोती रही इस भयानक आघात से।
"बिल्लियाँ तुम्हें मार देंगी, कैसे जाने दूँ तुम्हें!"
बोला जैस्पर, "तैयारी थी चूहों की कई दिन से इस मूर्खतापूर्ण अभियान की।
अगर मुझे लड़ना पड़ा तो मुझे फिक्र है तुम्हारी डॉली आंटी की जान की।"
दोनों बैठे थे सन्नाटे में, कोई शब्द नहीं था बाकी।
नफ़रत उनमें ज़रा नहीं थी, प्रेम की मिल गई थी झाँकी।



अचानक जैस्पर हवा में उछला,
"मेरे दिमाग में एक योजना है, अगर हम हिम्मत करें" बोला।
उसकी योजना थी बहुत सरल, सीधी और आसान,
कि चूहों, बिल्लियों को समझ में आए कि इसमें कोई फायदा नहीं महान।
सदा आपस में नफरत, लड़ाई और मार-काट से नहीं कोई फायदा,
बल्कि परस्पर प्यार के लेन-देन का लाभकारी है कायदा।

योजना



समय नहीं था नष्ट करने को, शुरू कर दिया उसी रात,
सामना तो इसका करना ही था, जानते थे दोनों यह बात।



अगली सुबह एक घर में सारे चूहे छिपे हुए थे तैयार,
बिल्लियाँ भी पीछे-पीछे मुस्कुराती आ गईं पास दीवार।



आदेश दे रहा था चूहों को, सार्जेंट, उनका नेता,
चिल्ला रहा था,"लात-मुक्के मारो, थूको, धक्का दो, काटना न भूलना, बेटा!



एक कान वाली एक नटखट बिल्ली, 'हॉट शॉट',
फुसफुसाहट सुनी गई उसकी, "मैं सबको निगल जाऊँगी, कर दूंगी सपाट।"



इस विकट समय में जैस्पर की बाहर आई देह,
उसके साहस से चकित लियोला ने कहा, "किसी को नहीं संदेह।"



कहा उसने,"मैं तुम सभी जानवरों को बताना चाहता हूँ।
मेरे मन में है प्यार, यह मैं जताना चाहता हूँ।"



वह गया भागकर एक बिल्ली के पास, जो उसे देख रही थी अवाक्।
उसे एक दिया बिल्ला लिखा था जिसपर 'हम दोस्त हैं बेबाक।



ऐसा ही एक बैज दिया एक चूहे को लियोला ने,
धड़कनें थम गईं उस अंधेरे घर के सीने में।





सेना का नेता हो गया भौंचक्का, मानों देख रहा हो सपना,
हॉट शॉट बिल्ला कुछ बोल न पाया, भूल गया अपनी योजना
लियोला ने पूछा चुहिया 'मीन मिलोनी' को,
"क्या वह कल आएगी उस के घर चाय पीने को?"

सबसे अधिक भयानक /नृशंस हैनरी से जैस्पर ने पूछा भरकर मिठास,
"एक रात आओ, पनीर खाएंगे, मेरे घर की दीवार के पास। "



तब धीरे-धीरे यह सब देख और समझकर, कर चिंतन,
सेनानायक सार्जेंट ने टबाथा के बाएँ पंजे पर दिया चुंबन।
कुछ मुस्कानें चमकीं, नहीं था गुर्राना
दृश्य था अद्भुत व खुश करने वाला, देख रहा था ज़माना।
तभी तालियों की गड़गड़ाहट के बीच चढ़ गया जैस्पर एक बक्से के ऊपर,
"दोस्तों, चूहों और बिल्लियों, सभी लोगों, सुनो खींच लो अपने पंजे भीतर।"



"बंद करो यह लड़ाई, यह मार-काट, व्यर्थ है, नाहक है, दुखभरी है।
यह घृणा एक-दूसरे से बहुत ही बुरी है।
अगर हम सीख जाएँ प्यार करना, सबसे, एक-दूसरे से, भाई,
हम गर्व से कह सकेंगे, यह बिल्ली है मेरा भाई।"



तब सब बहुत खुश हुए, कुछ धीरे-से सुबके,
बोले, "यह तो है चमत्कार!"
कोई चूहा-बिल्ली मरा नहीं। सब ठुमके।

प्यार करना है बेहतर, खुद को दो एक अवसर।
जीवन-मरण हुआ खतम। चलो दिखाओ नचकर।



लियोला बिल्ली और जैस्पर चूहा, खुश होकर
रात होने पर चले नाचते अपने घर।

कोई कहेगा, 'यह विजय बहुत छोटी थी'
पर सच्चाई यह है कि प्यार ने जंग जीती थी।

सुखांत
(जैस्पर की बदौलत खुशहाल समाज)





